The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 1 | Issue 3 | October 2023
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

सरगुजा अंचल की जनजातियां : एक सामाजिक अवलोकन

नीलम संजीव एक्का

समाजशास्त्र विभाग
दाऊ उत्तम साव शासकीय महाविद्यालय मचांदुर,दुर्ग (छ.ग.) भारत
nsekka2@gmail.com

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Keywords:
जनजाति,संस्कृति,विशेष पिछड़ी जनजाति, आदिवासी, पाट, PVTG, किवदंती

ABSTRACT

छत्तीसगढ़ के उत्तरी अंचल में स्थित प्राचीन सरगुजा रियासत क्षेत्र अब छत्तीसगढ़ का सरगुजा संभाग के नाम से जाना जाता है जहां विभिन्न जनजातीय समूह निवासरत हैं| जनजातियां अपनी विशिष्ट एवं विलक्षण सांस्कृतिक विशेषताओं तथा प्रकृति के साथ तालमेलपूर्वक जीवनयापन की पद्धति के लिए वैश्विक पटल पर अपना अलग स्थान निर्धारित करती हैं| विभिन्न जनजातीय समुदायों ने वर्तमान समय में भी जीवनशैली की आदिम ज्ञान परंपरों को संरक्षित रखा हुआ है| वर्त्तमान नगरीयकरण,ओद्योगिकीकरण और आधुनिकीकरण के इस दौर में जब वैश्विक तापमान में निरंतर वृद्धि होती जा रही है और मानव जीवन का भविष्य संकटमय प्रतीत होने लगा है| इसलिए वैश्विक स्तर पर प्रकृति से तालमेल के साथ जीवनयापन के तरीकों पर गंभीरता के साथ सम्पूर्ण मानव जगत विचारशील है|अत: जनजातियों की संस्कृति,प्रकृति से उनके तालमेल के साथ शताब्दियों तक

जीवनयापन के अनुभवों का अध्ययन करना अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो सकता है|प्रस्तुत शोध पत्र में मध्यभारत के सरगुजा क्षेत्र में निवासरत विभिन्न जनजातियों की स्थिति को सामाजिक - सांस्कृतिक और भौगोलिक दृष्टिकोण से देखने का प्रयास किया गया है|

प्रस्तावना:- घने जंगलों से आच्छादित मध्य भारत का एक क्षेत्रफल विशेष जिसके गर्भ में विभिन्न बहुमूल्य खनिजों की बहुतायत है, इस क्षेत्रफल विशेष का लगभग 44% भूभाग वनों से ढका हुआ है| इन्ही वनों एवं पहाड़ों पर आश्रित होकर शताब्दियों से निवास करते आ रहे मानव समुदाय को छत्तीसगढ़ की जनजाति अथवा आदिवासी के नाम से जाना जाता है| इसी क्षेत्रफल विशेष का नाम छत्तीसगढ़ राज्य है जिसका गठन 01 नवम्बर सन 2000 को हुआ था| वर्ष 2011 की जनगणना रिपोर्ट के अनुसार इस राज्य की कुल जनसँख्या का 32% भाग जनजातियों की है| राज्य में कुल 42 जनजातीय समूह निवासरत हैं जिनमें 07 जनजातीय समूह विशेष पिछड़ी जनजाति(PVTG-Particularly Vulnerable Tribal Groups) की सूची में सम्मिलित हैं|

छत्तीसगढ़ राज्य प्रशासनिक आधार पर पांच संभागों में विभक्त है सरगुजा,बिलासपुर,रायपुर,दुर्ग और बस्तर| राज्य के उत्तरी भाग में सरगुजा, दक्षिणी भाग में बस्तर और मध्य भाग में रायपुर,बिलासपुर और दुर्ग संभाग स्थित है|छत्तीसगढ़ के सरगुजा संभाग की सीमा रेखाएं उत्तर दिशा में उत्तर प्रदेश को तथा पूर्व दिशा में झारखण्ड राज्य को और पश्चिम दिशा में मध्यप्रदेश को छूती हैं|इस कारण सरगुजा में सीमावर्ती राज्यों की सामाजिक - सांस्कृतिक विशेषताओं से युक्त सुन्दर समन्वय मिलता है|छत्तीसगढ़ की 07 विशेष पिछड़ी जनजातियों (PVTG-Particularly Vulnerable Tribal Groups) में से तीन जनजातियाँ पंडो,पहाड़ी कोरवा एवं बिरहोर इसी सरगुजा अंचल में ही पाए जाते हैं,जो अपनी आदिम जीवनयापन पद्धति के लिए विशेष रूप से पहचाने जाते हैं और जिनके अस्तित्व पर संकट के बादल छाए हुए हैं||

सरगुजा नामकरण के पीछे किवदंती यह है कि प्राचीन समय में इस अंचल की तुलना स्वर्ग से की जाती थी और स्वर्ग शब्द ही कालांतर में सरगुजा शब्द के रूप में अपभ्रंशित हो गया | संभवत:

इस प्रकार इस क्षेत्र का नाम सरगुजा हो गया| वर्तमान में सरगुजा संभाग में कुल 05 जिले जशपुर,बलरामपुर,सूरजपुर,सरगुजा(अम्बिकापुर), और कोरिया हैं| सरगुजा अंचल में विभिन्न जनजातीय समूह निवासरत हैं जो इस अंचल को अलग सांस्कृतिक पहचान दिलाती हैं|

अध्ययन प्रविधि:- यह शोधपत्र अध्ययनकर्ता के क्षेत्रीय भ्रमण और अवलोकन द्वारा प्राप्त अनुभव जन्य तथ्यों तथा विभिन्न लेख,प्रकाशन,सरकारी रिपोर्ट आदि द्वितीयक तथ्यों पर आधारित है|

सरगुजा अंचल की जनजातियाँ:- सरगुजा अंचल के घने जंगलों, पहाड़ों और पाट प्रदेशों में विभिन्न जनजातियाँ अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान के साथ निवासरत हैं जिनका अवलोकन निम्न तालिका में किया गया है:-

तालिका क्रमांक 01

(सरगुजा अंचल की प्रमुख जनजातियों का विवरण)

क्रमांक	जनजाति का नाम	उपजाति
01	गोंड	मारिया,मुरिया,परजा,धुरवा
02	कंवर	राठिया,पैंकरा,चेखा,दुधकंवर
03	कोरवा	दिहाड़ी कोरवा,पहाड़ी कोरवा
04	बिरहोर	उथलू बिरहोर,जधीश बिरहोर
05	उरांव	धाँगर,धनका,कुदास
06	खैरवार	परवंधी,मछकोड़ा,खैरछुरा
07	नगेशिया	तेलहा,सेंदरिया
08	कोरकू	मेवासी,नवासी,रूमा,नहाला
09	भैना	छरिया,लरिया,झलयारा
10	पंडों	सरगुजिया,उत्तरांश
11	अगरिया	पथरिया,खुटिया
12	कोल	गवठिया,भूमिया
13	पारधी	शिकारी,बहेलिया
14	धनवार	धनुहार

तालिका क्रमांक 02

(सरगुजा संभाग की जिलेवार जनजातीय जनसंख्या,जनगणना - 2011)

क्रमांक	जिले का नाम	कुल जनसंख्या	पुरुष	महिला	जनजातियों का प्रतिशत
01	सरगुजा	1300628	652799	647829	55.11%
02	जशपुर	530378	262731	267647	62.28%
03	कोरिया	304280	152659	151621	46.18%

टीप:- वर्ष 2011 की स्थिति में संभाग में तीन जिले थे|

तालिका क्रमांक 03

(छत्तीसगढ़ की विशेष पिछड़ी जनजातियां)

क्रमांक	जनजाति का नाम	निवासरत के जिले	
01	अबूझमाड़िया	बस्तर	केंद्र सरकार द्वारा घोषित
02	कमार	गरियाबंद,धमतरी	
03	बैगा	मुंगेली,बिलासपुर,कवर्धा	
04	**बिरहोर**	**जशपुर**,रायगढ़,कोरबा	
05	**पहाड़ी कोरवा**	**जशपुर,बलरामपुर,**कोरबा	
06	भूँजिया	गरियाबंद,धमतरी,महासमुंद	राज्य सरकार द्वारा घोषित
07	**पंडो**	**सूरजपुर,बलरामपुर**	

टीप:- सरगुजा अंचल में निवासरत PVTGs बिरहोर,पहाड़ी कोरवा,पंडो|

विवेचना:- सरगुजा अंचल की जनजातियों विश्लेषण जिलेवार निम्न्वत है-

⁎**जशपुर जिले की जंनजातियां:-**जिले की कुल जनसंख्या का 62.28% भाग जनजातियों की है इस क्षेत्र में गोंड,कंवर,उरांव,खैरवार तथा विशेष पिछड़ी जनजाति *बिरहोर* और *पहाड़ी कोरवा* निवासरत हैं|भौगोलिक दृष्टिकोण से यह क्षेत्र दो भागों *ऊपर घाट* और *नीच घाट* में विभाजित है| ऊपर घाट में

पाट क्षेत्र अवस्थित है जिसमें विशेष पिछड़ी जनजाति *पहाड़ी कोरवा* निवासरत है| नीच घाट क्षेत्र अर्थात ऊपर घाट क्षेत की तुलना में कम ऊंचाई वाले क्षेत्र में विशेष पिछड़ी जनजाति *बिरहोर* का सकेन्द्रण है| जशपुर जिले की सीमा रेखा उड़ीसा तथा झारखंड राज्य को छूती है इस कारण इस क्षेत्र में मुंडा तथा खड़िया आदि जनजातियां जिनका सकेन्द्रण उड़ीसा तथा झारखंड में है भी न्यून जनसंख्या में निवासरत हैं|

***बलरामपुर जिले की जनजातियां:-**बलरामपुर जिले की सीमा रेखा उत्तर प्रदेश तथा झारखंड राज्य से लगी हुई है|छत्तीसगढ़ की सबसे ऊंची चोटी गौरलाटा इसी जिले में स्थित है और जारांग पाट,सामरी पाट इत्यादि पाट क्षेत्र बलरपुर जिले के अंतर्गत आते हैं|विशेष पिछड़ी जनजाति पहाड़ी कोरवा,पंडों, और बिरहोर सहित खैरवार,कंवर,उरांव,गोंड,कोरवा,नागेसिया इत्यादि जनजातीय समूह इस जिले में निवासरत है|

***सरगुजा(अम्बिकापुर)जिले की जनजातियां:-** सरगुजा जिला जिसके मुख्यालय का नाम अम्बिकापुर है| सन 1998 के पूर्व तक सम्पूर्ण सरगुजा संभाग के वर्तमान 04 जिले (जशपुर को छोड़कर) सरगुजा जिले के अंतर्गत आते थे| पूर्व सरगुजा जिले के अब प्रशासनिक दृष्टि से 04 भाग हो चुके हैं| वर्तमान का सरगुजा जिला पूर्व के सरगुजा जिला का क्षेत्रफल की दृष्टि से एक छोटा भाग है| सरगुजा जिला में गोंड,कोरवा,नागेसिया,कंवर,उरांव खैरवार,अगरिया आदि जनजातियां विद्यमान हैं|

***सूरजपुर जिले की जनजातियां:-** सरगुजा संभाग का सूरजपुर जिले की उत्तर पश्चिमी सीमा मध्यप्रदेश को छूती है| जनजातीय परिदृश्य के आधार पर यह क्षेत्र इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि राज्य शासन द्वारा घोषित विशेष पिछड़ी जनजाति पंडो का मुख्य सकेन्द्रण यहीं है अर्थात पंडो जनजाति मुख्यत: सुरजपुर जिले में ही निवासरत पाए जाते हैं| कोरकू, खैरवार, नगेशिया, अगरिया, कोल, धनवार,गोंड,कंवर आदि जिले में निवासरत अन्य जनजातीय समूह हैं|

***कोरिया जिले की जनजातियां:-**प्राचीनकाल में कोरिया इस क्षेत्र का महत्वपूर्ण रियासत था किन्तु वर्तमान में यह क्षेत्र छत्तीसगढ़ के सरगुजा संभाग के अंतर्गत एक जिला है जिसका मुख्यालय बैकुंठपुर है| इस जिले की लम्बी सीमा रेखा मध्यप्रदेश को छूती है| कोल, धनवार,गोंड,कंवर कोरकू, कोल आदि जनजातीय समूह इस जिले में निवासरत हैं|

निष्कर्ष:-सरगुजा अंचल के समग्र अवलोकन और विवेचन से स्पष्ट होता है कि सम्पूर्ण सरगुजा क्षेत्र में तीन विशेष पिछड़ी जनजाति पहाड़ी कोरवा,पंडो,बिरहोर सहित विभिन्न जनजातीय समूह अपनी विशिष्ट

सांस्कृतिक विशेषताओं के साथ जीवनयापन करते आ रहे हैं| किन्तु नगरीयकरण,ओद्योगिकीकरण और खनिज उत्खनन के कारण यहाँ की जनजातियों का अन्य समुदाय से संपर्क बढ़ चुका है जिससे इनकी परंपरागत जनजातीय संस्कृति का ह्वास होने लगा है साथ ही विस्थापन की प्रक्रिया ने भी इनके स्वाभाविक जीवनशैली को नकारात्मक रूप से प्रभावित करता हुआ दिखलाई दे रहा है| अत: प्रस्तुत शोधपत्र सुझाव देता है कि इस क्षेत्र में शताब्दियों से निवासरत जनजातियों की संस्कृति के संरक्षण और संवर्धन के लिए समुचित प्रयास किए जाएं|

संदर्भ ग्रंथ सूची:-

1. Ekka**,** Amia, Neelam Sanjeev Ekka (2013) - Traditional Health Care in Birhor Tribes of Chhattisgarh Online *International Interdisciplinary Research Journal* (Bi-Monthly), (ISSN: 2249-9598), Volume - III, Issue VI, Nov-Dec 2013 Page 476-483.
2. Ekka N.S.& Ekka, A. (2016) – Wild edible plants used by Tribals of North-east Chhattisgarh (Part- I), India. *Research Journal of Recent Sciences,* Vol. 5 **(**ISC-2015), 127-131 E-ISSN 2277-2502
3. मीणा राजीव (2019) आदिवासीयों का पर्यावरण संरक्षण एवं सतत् विकास में योगदान और बेदखली की समस्या व समाधान. *Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education* 16(4):1643-1648.
4. संजय अलंग-छत्तीसगढ़ की जनजातियाँ/Tribes और जातियाँ/Castes. मानसी पब्लीकेशन, दिल्ली, ISBN 978-81-89559-32-8)
5. सिंह टी.के. (2019) छत्तीसगढ़ में कंवर जनजाति एक सामान्य अध्ययन, *International journal of review and research in social science*.7(2): 87.
6. शर्मा,ब्रम्हदेव(1999)आदिवासी विकास:एक सैद्धांतिक विवेचन,मध्यप्रदेश हिंदी ग्रन्थ अकादमी भोपाल (म.प्र.)
7. शुक्ल,हीरालाल (2003) छत्तीसगढ़ का जनजातीय इतिहास,मध्यप्रदेश हिंदी ग्रन्थ अकादमी भोपाल (म.प्र.)